ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)44-48
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

सुमन वर्मा
शोधार्थी
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

Corresponding Author :

सुमन वर्मा
शोधार्थी
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

यशपाल का उपन्यास झूठा-सच में नारी चेतना

'झूठा-सच' यशपाल का बहुत ही महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह महाकाव्यात्मक प्रकृति का उपन्यास है। झूठा-सच उपन्यास देश विभाजन की त्रासदी को आधार बना कर लिखा गया है। यह उपन्यास दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग **'वतन और देश'** (1958 ई०) तथा दूसरा भाग **'देश का भविष्य'** (1960 ई०) है। उपन्यास के प्रथम भाग **'वतन और देश'** में भारत-विभाजन के वास्तविक कारणों विभाजन से उत्पन्न दर्दनाक स्थितियों, विस्थापितों तथा शरणार्थियों की समस्याओं को उजागर किया गया है। तारा जैसी स्त्री पात्र के माध्यम से बताया गया है कि भारत- विभाजन के समय महिलाओं की क्या दुर्दशा थी। इस दुर्दशा को झेलती हुई कुछ स्त्रियां तो सही स्थिति में पहुंच गई वहीं कुछ स्त्रियों को अत्याचार झेलते- झेलते अपनी जान भी गंवानी पड़ी।

यह उपन्यास सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास में राजनीतिक और सामाजिक पक्षों का सजीव वर्णन यशपाल जी ने किया है। इस उपन्यास में यशपाल जी तत्कालीन समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने में पूर्णत: सफल रहे हैं। इस सन्दर्भ में स्वयं यशपाल जी उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं कि- **"सच को कल्पना से रंग कर उसी जन- समुदाय को सौंप रहा हूँ। जो सदा झूठ से ठगा जाकर भी सच के लिए अपनी निष्ठा और उसकी ओर बढ़ने का साहस नहीं छोड़ता।"**[1]

भारतीय साहित्यकारों ने स्त्रियों की स्थिति के विषय में बहुत कुछ लिखा है, परन्तु यशपाल जी जैसा किसी साहित्यकार ने नहीं लिखा है। स्त्रियों की मनः स्थिति और उनके आत्मसंघर्ष, वाह्य संघर्ष को जितना मनोवैज्ञानिक ढंग से यशपाल जी समझ पाए है, उतना हिन्दी का अन्य कोई साहित्यकार या उपन्यासकार नहीं। यशपाल ने स्त्री की स्वतंत्रता, संघर्ष, समानता और उनकी अस्मिता पर होने वाले अत्याचारों और अन्यायों को अपनी लेखनी के माध्यम से बहुत ही दृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया है। झूठा-सच उपन्यास में यशपाल जी ने स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों, अन्यायों और उनकी तत्कालीन सामाजिक समस्याओं तथा उन समस्याओं से निपटने का प्रयास करती हुई स्त्रियों के संघर्ष को पूरी लगन और दृढ़ता के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

स्त्री जन्म लेते ही किसी न किसी पुरुष के संरक्षण में रहती है। वह संरक्षण पिता,भाई,पति और पुत्र का होता है। जन्म लेते ही उसे पिता का संरक्षण प्राप्त होता है, भाई का संरक्षण मिलता है, विवाह पश्चात पति का और वृद्धावस्था में पुत्र का संरक्षण प्राप्त होता है। इस तरह स्त्री आजीवन पुरुषों के संरक्षण में रहती है। इस तरह से वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व खो देती है।इस सन्दर्भ में यशपाल जी कहते है कि - **"उस समाज में नारी को सिद्धांत रूप में बहुत सी सुविधाएं और स्वाधीनता प्राप्त है लेकिन व्यवहार में ये बहुत कम है। वास्तविक रूप में नारी का अपना कोई अस्तित्व और गौरव नहीं है। उसका अस्तित्व किसी की पुत्री, श्रीमती, और माता बनने में है।"**2

'झूठा-सच' उपन्यास में यशपाल जी ने स्त्री जीवन के अनेक प्रकार के बंधनों को वास्तविक धरातल पर उद्घाटित किया है। झूठा-सच उपन्यास के नारी पात्र कनक, तारा, शीलो, बंती के माध्यम से यशपाल जी यह बताते हैं कि स्त्री चाहे मध्यवर्ग की हो, चाहे उच्चवर्ग की हो और चाहे निम्नवर्ग की हो किसी न किसी रूप में उसके साथ अत्याचार होता ही है।

'झूठा-सच' उपन्यास की नायिका तारा एक मध्यमवर्गीय परिवार की बेटी है। तारा शिक्षित और बुद्धिमान लड़की होने के साथ ही साथ प्रगतिशील विचारधारा की है। चूंकि उसका परिवार मध्यवर्गीय रूढ़िग्रस्त परिवार था इसलिए उस पर बचपन से ही परंपरागत नैतिक अनुशासन थोप दिया जाता है।

यशपाल जी लिखते हैं - **"तारा बचपन से ही मास्टर जी के धार्मिक विश्वासों का अनुशासन सहती आई थी।"**3

इस कथन से तत्कालीन पारिवारिक सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों की स्थिति का पता चलता है। परंपरागत और रूढ़िग्रस्त परिवार में स्त्रियों के व्यक्तित्व का विकास स्वतंत्र रूप से नहीं हो पाता था। प्रायः पारम्परिक और रूढ़िग्रस्त परिवार के अनुचित बंधन घर की स्त्रियों पर थोप दिए जाते थे। स्त्रियां वह बंधन स्वीकार कर अपने व्यक्तित्व का विकास सही ढंग से नहीं कर पाने के लिए विवश होती थी, परन्तु झूठा- सच उपन्यास में स्त्री पात्र तारा के माध्यम से यशपाल जी ने स्पष्ट किया है कि परंपरागत और रूढ़िग्रस्त परिवार की लड़की होने के बाद भी वह परंपरागत मूल्यों को तोड़ती हुई नजर आती है। वह उन गलत धारणाओं और विचारधाराओं का विरोधकर अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास के लिए लगातार संघर्षरत रहती है। तारा का आत्मविश्वास उसकी शिक्षा, और आधुनिक तथा स्वतंत्र विचारों की वजह से ही अधिक बढ़ जाता है। उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास में उसकी शिक्षा और आधुनिक विचारों का विशेष महत्व रहा है। इसी वजह से वह अपने मित्रमंडली असद, जुबेदा, जुबेर के साथ खुलकर जीवन व्यतीत करती हुई दिखाई देती है। इस संदर्भ में उपन्यासकार यशपाल जी लिखते है कि- **"इन लोगों की संगति में उसे जान पड़ा कि वह स्वभाव और रुचि से अपराधी नहीं थी। वह आत्मसम्मान अनुभव करने लगी। रेस्टोरेंट में कभी जुबैदा, असद, जुबेर के साथ बैठकर निःसंकोच कुछ खा लेने से उसे मिथ्या संस्कारों से मुक्ति का संतोष होता था। इनमें से किसी लड़के से निःसंकोच बात करते हुऐ साथ चलने पर समता और आत्मविश्वास की अनुभूति होती थी।"**4 इस बात से स्पष्ट है कि तारा परंपरागत और रूढ़िग्रस्त परिवार के अनुचित बंधनों को तोड़ती है और अपनी जिंदगी अपनी इच्छानुसार जीने के लिए प्रयासरत है और इस बात से उसे आत्मिक संतोष का अनुभव होता है।

हमारे भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति बहुत ही दयनीय है। समाज के सारे अनुचित नियम स्त्रियों पर ही लागू होते है। स्त्री को अनुचित अनुशासन और नियम के नाम पर कभी संस्कार के कारण तो कभी विवाह के नाम पर उसे अनुचित सामाजिक बंधन में रखा जाता है। इसके नाम पर स्त्रियों का शोषण किया जाता है। समाज में पुरुष स्त्रियों को दबाकर रखना चाहता है और अपनी इच्छाएं उस पर थोप देता है। भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति इतनी दयनीय और सोचनीय है कि पुरुष उनकी भावनाओं का भी ख्याल नहीं रखते हैं, उनकी भावनाओं की कोई कद्र नहीं। यशपाल ने तारा के माध्यम से यह बात स्पष्ट करने का प्रयास किया है, जब तारा अपनी बी.ए. की पढ़ाई पूरी कर आगे पढ़कर कुछ बनना चाहती है तब उसकी पढ़ाई रुकवाकर उसकी शादी ऐसे व्यक्ति से उसके मर्जी के खिलाफ उसके पिता तय कर देते है, जो गुंडा और बदमाश है जिसका व्यवहार समाज में बिलकुल भी अच्छा नहीं है, जबकि तारा अपनी पढ़ाई जारी रखने के साथ ही साथ किसी अच्छे और योग्य व्यक्ति से अपना विवाह करना चाहती है। **"स्त्री अपने से कम योग्य अथवा हीन व्यक्ति**

के प्रति कभी श्रद्धा या प्रेम नहीं कर सकती।"5 इसके बावजूद तारा के पिता तारा का विवाह सोमराज गुंडे से कर देते हैं। तारा की मर्जी का ख्याल नहीं करते हैं।

तारा अपने पिता के इस कृत्य का प्रतिरोध करती है - **"वह उस व्यक्ति से विवाह नहीं करेगी जो योग्यता में उससे भी कम है, विवाह करेगी तो खूब विद्वान और प्रतिभाशाली व्यक्ति से ही। अपनी अपेक्षा हीन आदमी से क्या विवाह ? स्त्री अपने शोभा पुरुष को पाने में ही समझ लेती है। स्त्री जिसे अपने से बढ़कर नही समझ सकती उसे अपने योग्य कैसे समझे , उसके प्रति श्रद्धा और प्यार क्या ?"**6 तारा के इस कथन स्पष्ट है कि वह अपनी स्वतंत्रता चाहती है और अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाहती है तथा जीवन साथी का चुनाव भी अपनी इच्छा से करना चाहती है। वह अपनी जिंदगी अपनी इच्छानुसार जीने के लिए सजग है।तारा असद को पसंद करती है उसी को अपना जीवनसाथी बनाना चाहती है। असद के द्वारा तारा से यह पूछने पर की क्या तुम धर्म की खांई को लांघ पाओगी? तारा जवाब देती है - **"हाथ पकड़ेंगे तो लांघ जाऊंगी।"7**

तारा के बात से स्पष्ट है कि वह परम्परागत नियमों में बंधे नहीं रहना चाहती है और अपनी इच्छानुसार स्वतंत्र रूप से जीवन जीना चाहती है। तारा समाज के द्वारा बनाए गए खोखले नियमों का पालन नहीं करना चाहती है जो उसकी खुशी और उसकी भावनाओं का ख्याल नहीं रखते है ऐसे सामाजिक कठोर नियमों को निभाने से क्या लाभ, जो किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रसन्नता को ही कटघरे में खड़ा कर दें।

यशपाल जी का मानना है कि स्त्रियों के शोषण का और उन पर होने वाले अत्याचारों का सबसे बड़ा कारण विवाह संस्था है। यशपाल ने 'झूठा - सच' के स्त्री पात्र तारा, शीलो, मिसेज अग्रवाल, बंती और नब्बू की पत्नी के वैवाहिक जीवन के माध्यम से यही बताने का प्रयास किया है। तारा जब अपने पिता के कहने पर अपनी बिना मर्जी के भी सोमराज गुण्डे के साथ विवाह करके उसके घर जाती है तो सोमराज पहली ही रात्रि अपनी हैवानियत का परिचय देते हुए तारा से कहता है कि – **"भूखे मास्टर की औलाद, तेरी हिम्मत कि मुझसे शादी के लिए मिजाज दिखाए? बी.ए. पढ़ने का बहुत घमण्ड है? तेरी जैसी बीसियों को टाँगों के बीच से निकाल दिया है। देखूंगा तुझे! गली-गली कुत्तों और गधों से न रौंदवा दिया।"**8

सोमराज के तारा के प्रति इस बर्ताव से उसके रूढ़िग्रस्त पुरुष की सामंती और कुत्सित सोच का पता चलता है, जो स्त्रियों को पुरुषों की गुलाम समझते हैं। पत्नी को इंसान न समझकर वस्तु समझते हैं और यह सोचते हैं कि इसमें कोई प्राण नहीं है। यह निर्जीव वस्तु के समान है। इसकी अपनी कोई इच्छाएं या भावनाएँ नहीं है। इसको मेरे ही कहे अनुसार चलना चाहिए चाहे मैं उचित कहूँ या अनुचित। सोमराज इसी कुत्सित मानसिकता का पुरुष है। सोमराज के इस कथन से तारा के पिता की दयनीय आर्थिक स्थिति का भी पता चलता है। इस बात से यह पता चलता है कि तारा के पिता तारा का विवाह सोमराज जैसे अभद्र और कुकर्मी व्यक्ति से इसलिए कर देते हैं कि वह धनाभाव के कारण समाज में चल रहे सामाजिक बुराई दहेज को यथोचित प्रकार से दे नहीं सकते हैं, इसलिए वह अपनी पुत्री तारा का विवाह सोमराज से करने पर विवश हो जाते हैं। इन सभी स्थितियों से स्पष्ट है कि यह परंपरागत सामाजिक बुराई ही है जिसका परिणाम तारा जैसी लड़कियों को झेलना पड़ता है। हालांकि हमारे वेद पुराणों में स्त्रियों को देवी का दर्जा दिया गया है परंतु वास्तविकता में उसका कोई सम्मान नहीं है और न ही वह स्वाधीन ही है। वास्तविकता में वह सामाजिक बुराईयों को झेलती है। समाज में उसे दोयम दर्जे का नागरिक समझा जाता है। वह स्वतंत्र होकर अपनी इच्छानुसार अपना जीवन यापन भी नहीं कर सकती है। यशपाल जी ने समाज द्वारा स्त्रियों पर किए गये इसी दोगले व्यवहार पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि- **"स्त्री का स्थान माता का जरूर है, वह पूजा की पात्र है, परन्तु पूजा के पात्र जितने देवता होते हैं, वे सब मन्दिर में बंद रहते हैं और चाबी पुजारी के जेब में रहती है।"**9

यशपाल जी ने तारा के माध्यम से समाज की नैतिक बुराई दहेज की तरफ भी पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। यशपाल ने यह दिखाना चाहा है कि यदि तारा के पिता दहेज देने में समर्थ होते तो सोमराज जैसे दुराचारी व्यक्ति से अपनी पुत्री तारा का विवाह नहीं करते। अतः समाज में ऐसे कितने ही पिता होंगे जो अपनी पुत्रियों का विवाह दहेज देने में असमर्थ होने के कारण अयोग्य पुरुष से कर देते

होंगे, जिसका खामियाजा उन स्त्रियों को भुगतना पड़ता है। इस सन्दर्भ में डॉ. मृणाल पाण्डेय जी का कहना है कि– **"समाज में स्त्री की स्थिति और विवाह दोनों के ही प्रति अपने बुनियादी पारम्परिक रुख में परिवर्तन करना होगा। जब तक हमारे यहां वैवाहिक सम्बंध दो व्यक्तियों के पारस्परिक प्रेम पर आधारित होने के बजाय बिरादरी और घरवालों के माध्यम से ठहराए पारिवारिक सामाजिक समझौते के रुप में होते रहेंगे, दहेज के लिए हाशिए पर हमेशा जगह बनी रहेगी।"**10

अनेक कष्ट झेलते हुए तारा जब आत्मनिर्भर हो जाती है, तब वह समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों, मान्यताओं एवम् रूढ़ियों का खण्डन करती है, जो स्त्री को पुरूष की यंत्रणा सहने को मजबूर करते है, चूंकि विवाह भी कहीं न कहीं से सामाजिक तौर पर स्त्रियों को ही पुरुषों की दासता स्वीकार करने पर विवश करता है। वह विवाह संस्था का विरोध करती हुई कहती है– **"यह लोग क्यों समझते है कि बिना ब्याही औरत आवारा ही होती है, उसे किसी न किसी खूंटे से बांध ही देना चाहिए। किसी न किसी को उसका मालिक बन ही जाना चाहिए।"**11

इस प्रकार तारा के इस कथन से यशपाल जी यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि आजीवन अनेक कष्टों को झेलते हुए स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता के प्रति संघर्षरत तारा अंत तक अपने विचारों को नहीं बदलती है वरन् अपनी आत्मनिर्भरता के बल पर उस मुकाम तक पहुंचती है, जहां पर अपने जीवन से जुड़े फैसले वह खुद ले सकती है।

'झूठा–सच' उपन्यास में तारा के अलावा भी ऐसी अनेक स्त्री पात्र हैं जिन्होंने भारत–विभाजन के दौरान अनेक अपमानजनक कष्टों को झेला है। तारा, बंती, सतवंत, चिंती, करीमों,दुर्गा और फूलों इन स्त्रियों ने भी भारत-विभाजन के दौरान भड़के सांप्रदायिक दंगों में बहुत ही अत्याचार सहन किए हैं। भारत-विभाजन के दौरान पाकिस्तान में हिन्दू महिलाओ के साथ दुराचार किया गया और हिन्दुस्तान में मुस्लिम महिलाओं के साथ अत्याचार किया गया। दोनों ही स्थितियों में अत्याचार स्त्रियों को ही सहन करने पड़े हैं, चाहे वह किसी भी धर्म या सम्प्रदाय की रही हो। दोनों धर्म और सम्प्रदायों के बीच स्त्रियां ही पिसती रही।

'झूठा - सच' उपन्यास में यशपाल ने ऐसी ही एक मार्मिक और कुत्सित घटना को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया है– **"भीड़ के बीचोबीच नीलाम करने वाला एक जवान लड़की को चुटिया से खींचकर खड़ी किए था। लड़की के शरीर पर कोई कपड़ा न था। माल ग्राहकों को अच्छी तरह दिखा देने के लिए उसने लड़की की कमर के पीछे अपने घुटने से ठेस देकर उसके सब अंगों को सामने उभार दिया था।"**12 हिन्दू और मुसलमान आपस में लड़ते झगड़ते थे, परन्तु वह अपनी दरंदिगी का शिकार स्त्रियों की ही बनाते थे। विभाजन देश का हुआ था, परन्तु उसमें सबसे ज्यादा अत्याचार और अन्याय स्त्रियों को ही सहन करना पड़ा। देश- विभाजन के दौरान हिन्दू और मुसलमान दोनों एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए थे, उनकी बुद्धि-विवेक पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुकी थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने सबसे अधिक क्रूरता स्त्रियों के साथ किया था, जबकि स्त्रियां पूर्णता निर्दोष थीं। मुसलमान और हिन्दू साम्प्रदायिकता के आग में अंधे होकर हिंदू और मुस्लिम स्त्रियों के साथ पशुवत् व्यवहार कर रहे थे। स्त्रियों को अपनी पाशविकता का शिकार बनाया। यशपाल ने इस हृदय को द्रवित कर देने वाली घटना का इस प्रकार वर्णन किया है- **"हिंदनी हो या मुसलमानी, जो अपनी इज्जत के लिए मर गई वही सबसे अच्छी रही। औरत की शरीर की तो बर्बादी ही है। औरत तो भेड़-बकरी है, जो चाहे छीन ले जाए, दुश्मन की चीज समझकर काट डालें। जाने किन-किन कर्मों के फल से औरत का तन पाया है।"**13

इस कथन से स्पष्ट है कि नारियों की दुर्दशा के प्रति यशपाल का हृदय आहत हैं। पूरे उपन्यास में उन्होंने स्त्रियों की मनः स्थिति को समझते हुए उनके दुःख दर्द को भी समझा है। उपन्यास के माध्यम से यशपाल जी ने यह स्पष्ट किया है कि भारत-विभाजन के दौरान सबसे ज्यादा यातनाएं स्त्रियों को झेलनी पड़ी है। हिन्दू–मुस्लिम की लड़ाई में ज्यादातर दुर्गति हिन्दू-मुस्लिम स्त्रियों की हुई है। भारत - विभाजन के दौरान हुए दंगों में स्त्रियों के साथ हुए अत्याचारों को यशपाल ने पूरी सहानुभूति और संवेदना के साथ उपन्यास में प्रस्तुत किया है। उपन्यास में तारा जैसी स्त्रियां जहां सामाजिक यातनाओं का विरोध करती हैं वहीं अपनी शिक्षा और संघर्ष के बल पर उच्च पद को

प्राप्त करती है। विभाजन के दौरान हुए सांप्रदायिक दंगों में हिन्दू-मुस्लिम झगड़े में अनेक स्त्रियां अपमानित होती हुई आजीवन संघर्ष और यातना झेलती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. झूठा–सच, भाग–1, 2002, पृष्ठ संख्या- 5
2. बात–बात में, यशपाल, पृष्ठ संख्या- 55
3. झूठा–सच, भाग–1, यशपाल, पृष्ठ संख्या- 20
4. झूठा–सच, भाग–1, पृष्ठ संख्या- 21
5. झूठा–सच, भाग–1, पृष्ठ संख्या- 61
6. झूठा–सच, भाग–1, पृष्ठ संख्या- 51
7. झूठा–सच, भाग–1, पृष्ठ संख्या- 86
8. झूठा–सच, भाग–1, पृष्ठ संख्या- 333
9. डॉ० कुंवरपाल सिंह, हिंदी उपन्यास सामाजिक चेतना, 1976 पृष्ठ संख्या– 76
10. डॉ० मृणाल पाण्डे, स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, पृष्ठ संख्या– 59
11. झूठा–सच, भाग–2, 2003, पृष्ठ संख्या- 331
12. झूठा–सच, भाग–1, पृष्ठ संख्या- 406
13. झूठा–सच, भाग–2, पृष्ठ संख्या- 104

• • •